

चितीकृ (चित् + 1. कृ) zum Gegenstand des Nachdenkens machen: एको मयेकं भगवान्विबुधप्रधानश्चितीकृतः प्रज्ञानाय BH. P. 4, 1, 28.

चितोन्नति (चित् + उन्नति) f. Hochmuth, Stolz H. 317.

चित्पति (3. चित् + पति) m. der Herr des Denkens VS. 4, 4. P. 6, 2, 19 (nach dem Schol. oxyt.).

चित्प्रवृत्ति (3. चित् + प्र) f. das Denken, Nachdenken TR. 3, 3, 166.

चित्यं (von 1. चि) P. 3, 1, 132. 1) adj. was aneinander gereiht —, aufgebaut wird: चित्वा चित्यं कृत्वा: पूरुषस्य AV. 10, 2, 8. Bes. gebr. vom Feuer: was auf eine Schicht, einen Unterbau gesetzt wird; mit und ohne Beisatz von अग्निः सर्वाणि वृषाण्यग्नौ चित्ये क्रियन्ते TS. 5, 1, 8, 4. AIT. Br. 5, 28. सो ऽस्यैव चित्यं आसीत् चेतव्यो ह्यस्यासीत्तस्माच्चित्यः CAT. Br. 6, 1, 2, 16. 2, 3, 2, 18. KĀTJ. Çr. 16, 7, 31. 18, 2, 1. 3, 1. 5, 15. ÇĀNKH. Çr. 9, 23, 2. P. 3, 1, 132. Sch. Vop. 26, 11. — 2) f. चित्पा das Schichten, Aufbauen (des Altars u. s. w.): अग्निचित्या (s. auch bes.) CAT. Br. 6, 6, 1, 1. 13. 13, 8, 1, 17. ÇĀNKH. Çr. 8, 13, 10. KĀTJ. Çr. 2, 6, 28. सग्निचित्यं 7, 2, 3. अग्निचित्यं 8, 3, 3. मठचित्या PĀNĀT. II, 66. चतुश्चित्यं auf vier Schichten ruhend MBh. 14, 2634. — Scheiterhaufen AK. 2, 8, 2, 86. H. 373. an. 2, 358. MED. j. 21. — 3) n. der Ort wo ein Leichnam verbrannt worden und ein Gedenkzeichen daran errichtet worden ist, Grabmahl TR. 2, 8, 62 (falschlich: चित्). H. an. MED. चित्यमाल्याङ्गराग R. 1, 58, 10.

चित्रं (von 4. चित्) Up. 4, 165. 1) adj. f. आ a) augenfällig; sichtbar, ausgezeichnet: उति RV. 2, 17, 8. 4, 32, 5. 5, 40, 3. अग्निष्टि 1, 119, 8. 8, 3, 2. स चिकित् सहीयसाग्निश्चित्रेण कर्मणा 39, 5. वज्रय 56, 3. ग्राम 70, 1. वत्तय 10, 115, 1. वसु 9, 19, 1. राधस् 1, 22, 7. 44, 1 u. s. w. द्रविण 2, 23, 15. 10, 36, 13. उपो वात्रं हि वंस्व यश्चित्रो मानुषे जने 1, 48, 11. 4, 22, 10. 36, 9. स चित्रं चित्रं चित्यं तस्मै चित्रं तत्र चित्रं तमे वयोधाम्। चन्द्रं रयिं गृणति युवस्व 6, 6, 7. चित्रं केतुं कृणते चेकिताना 1, 93, 15. 94, 5. 113, 1. आ चित्रं चित्रिणीषा। चित्रं कृणाप्यृत्यै 4, 32, 2. — b) hell, licht; hellfarbig: उपसतः RV. 7, 73, 3. 6, 60, 2. अग्नि 1, 71, 1. 4, 7, 1. ज्योतिस् 5, 63, 4. सूर्यो न चित्रः 9, 86, 34. स चित्रेण चिकित्ते भासा 2, 3, 5. आ यः स्वर्णं भानुना चित्रो विभात्यर्चिषा 8, 4. रश्मि 9, 100, 8. नक्षत्र TBr. 3, 1, 2, 1. Indra RV. 1, 142, 4. 2, 13, 13 u. s. w. die Marut 1, 163, 13. 8, 7, 7. अश्व 5, 63, 3. रथ 3, 2, 15. अश्व 1, 30, 21. 10, 73, 7. वज्र 1, 134, 4. वृष 5, 52, 11. — c) verschiedenfarbig, bunt, scheckig AK. 1, 1, 4, 26. TR. 3, 3, 347. H. 1398. an. 2, 418. MED. r. 34. स्रजः N. 4, 8. पुष्पवती चित्रा वनमालाम् R. 5, 4, 2. MĀKĀ. 92, 7. In Verb. mit einem instr. oder nach einem im instr. zu fassenden Worte im comp.: सौवर्णस्त्वं मृगो भूत्वा चित्रो रजतविन्दुभिः R. 3, 44, 16. काञ्चनचित्रकार्मुक 8, 25. वैदूर्यमणिचित्रे — अङ्गदे 6, 112, 88. रत्नचित्र (रथ) VARĀH. BRH. S. 42 (43), 6. मुकुटाङ्गदचित्राङ्गी R. 1, 43, 41. — d) bewegt (vom Meere), Gegens. सम R. 3, 39, 12. — e) hell, vernehmlich (von Tönen): वाचं पर्जन्यश्चित्रो वदति त्विषोमतीम् RV. 5, 63, 6. अर्क 6, 66, 9. 10, 112, 9. पर्वमानो अजीजनद्विचित्रं न तन्यतुम् 9, 61, 16. — f) mannichfaltig, verschieden, allerlei: वनराजयः R. 6, 13, 6. कथाः MBh. 1, 3. R. 1, 3, 10. भाष्य MBh. 5, 1240. वधोपायैः M. 9, 248. JĀĒN. 1, 287. Abg. 7, 14. Suçr. 4, 237, 17. 241, 14. 2, 93, 6. PĀNĀT. I, 196. 429. BHĀG. P. 4, 6, 12. 13. 3, 19, 6. adv.: चित्रं संक्रोडमानास्ताः क्रीडन्निर्विविधैः R. 1, 9, 14. वञ्चचित्रपरिष्कृते (अङ्गदे) R. 6, 112, 88. — g) wunderbar MED.; vgl. 4, b. — h) das Wort चित्र enthaltend: चित्रे गायति CAT. Br. 7, 4, 4, 24. KĀTJ. Çr.

17, 4, 4. — 2) m. a) Buntheit BHAR. zu AK. ÇKDr. — b) N. verschied. Pflanzen: a) *Plumbago zeylanica* Lin. RĀGĀN. im ÇKDr. MED. I. 11. — ß) *Ricinus communis*. — γ) *Jonesia Asoka* (अशोक) ROXB. RĀGĀN. im ÇKDr. — c) eine Form des *Jama Tithi* ĀDIT. im ÇKDr. — d) N. pr. eines Königs (parox.) RV. 8, 21, 18. eines Gāṅgājāni Ind. St. 1, 395. Gauṣṭrājāni ebend. eines Sohnes des Dhṛtarāṣṭra MBh. 1, 2730. 4543. 7, 5594. eines Königs von Draviḍa PADMA-P. in Verz. d. B. H. No. 457. — 3) f. आ a) *Spica virginis*, in der alten Reihe das 12te, in der neuen das 14te Mondhaus, COLEBR. Misc. Ess. II, 337. 425. 463. 481. Ind. St. 1, 99. TR. 3, 3, 347. H. 112. H. an. MED. AV. 19, 7, 3. TS. 2, 4, 6, 1. चित्रा नक्षत्रं मित्रो देवता 4, 4, 10, 2. TBr. 1, 1, 2, 5. CAT. Br. 2, 1, 2, 13. 17. KAUC. 75. KĀTJ. Çr. 4, 7, 4. MBh. 5, 4842. 6, 79. 13, 3268. 4261. HARIV. 4257. R. 3, 23, 11. 5, 18, 14. RAGH. 1, 46. LALIT. 117. pl. VARĀH. BRH. S. 11, 58. चित्रास्वाती gaṇa राजदत्तादि zu P. 2, 2, 31. — b) eine Schlangenart H. an. MED. — c) N. verschied. Pflanzen: a) *Anthericum tuberosum* ROXB. oder *Salvinia cucullata* ROXB. = मूषिकपर्णी AK. 2, 4, 2, 6. = घ्राक्षपर्णी H. an. MED. — ß) *Cucumis maderaspatanus* AK. 2, 4, 5, 22. H. an. MED. Koloquinthe RATNAM. 13. — γ) = दत्ती H. an. MED. RATNAM. 34. — δ) *Ricinus communis* RATNAM. 3. — e) *Myrobalanenbaum* (अमलकी) RATNAM. 90. — ζ) = मृगैर्वाह. — η) गाण्डर्वी. — θ) *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) ROXB. RĀGĀN. — Suçr. 1, 144, 14. 2, 21, 15. 23, 2, wahrscheinlich in der Bed. ß. — d) N. verschiedener Metra: a) eine Art Mātrāsamaka (4 Mal 16 Moren) COLEBR. Misc. Ess. II, 155 (2, 4). 86. — ß) 4 Mal — — — — — ebend. 161 (X, 11). — γ) 4 Mal — — — — — ebend. 162 (XI, 3); hier bei COLEBR. चित्र. — e) Schein, Täuschung (माया) MED. — f) N. pr. = चित्रायो जाता P. 4, 3, 24. VĀRTT. 1. a) einer Apsaras H. an. — ß) einer Schwester Kṛṣṇa's und Gemahlin Arjuna's, = सुभद्रा TR. H. an. MED. HARIV. 1952. — γ) einer Tochter Gada's (v. l. Kṛṣṇa's) HARIV. 9194. — δ) eines Flusses MED. — 4) n. SIDDH. K. 249, b, 2. a) eine helle, glänzende oder farbige Erscheinung; ein in die Augen fallender Gegenstand, daher auch funkelndes Geschmeide, Schmuck: आ रेवती रोदसी चित्रमस्यात् RV. 3, 61, 6. कदम्ब चित्रं चिकित्ते 4, 23, 2. सर्वाणि हि चित्राण्यग्निः (hierher oder zu b) CAT. Br. 6, 1, 2, 20. 7, 4, 4, 24. न यासु चित्रं ददृशे न यत्नम् RV. 7, 61, 5. आ वंश्चित्रमा वै व्रतमा वो ऽहं समितिं दे 10, 166, 4. नक्षत्रचिकित्तासौ (der Himmel) चित्रचिकित्तेयम् (die Erde) TS. 2, 3, 2, 5. चित्राण्यङ्गैर्नक्षत्राणि वृषेण (प्रीणामि) VS. 23, 9. PĀNĀT. Br. 18, 9. दक्षिणावतमिदमानि चित्रा दक्षिणावता दिवि सूर्यासः RV. 1, 123, 6. उषस्तच्चित्रमा भेरास्मभ्यम्। येन तोकं च तन्यं च धामके bring uns den Schmuck, dass wir Kind und Enkel besitzen 92, 13. सा ह्येयं (रात्रिः) संगृह्येव चित्राणि वसति die Sterne als Edelsteine gedacht CAT. Br. 2, 3, 4, 22. चित्रं पश्चात्स्यात्प्रजा वै चित्रं चित्रं ह्यस्य प्रजा भवति 13, 8, 4, 13; nach dem Schol. zu KĀTJ. Çr. 21, 3, 23 und SHARV. Br. 2, 10 soll es hier = अनेकप्रकारं वनम् verschiedenfarbiges oder — gestaltetes Gehölz sein. — b) eine ungewöhnliche Erscheinung, Wunder AK. 1, 1, 2, 19. 3, 4, 25, 180. H. 303. H. an. MED. चित्रं वा अभूय य इत्यतः सपत्नानवधिष्य CAT. Br. 2, 1, 2, 17. तच्चित्रमिव मे प्रतिभाति ÇĀK. 110, 17. BHARTṚ. 3. 39. PĀNĀT. 256, 12. ÇRṆGĀRAT. 21. BHĀG. P. 5, 1, 36. वाक्यमप्रतिवृत्तं हि न चित्रं स्त्रीपु R. 3,